ई-लर्निंग पाठ्य सामग्री

वर्ग ... स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)

विषय ... हिन्दी

पत्र ... प्रथम

शीर्षक ... प्रमुख नाथ कवियों का परिचय (भाग - 2)

प्रमुख नाथ कवि

2. गोरखनाथ :-
ये मत्स्येन्द्र नाथ के शिष्य थे। इन्होंने अपने गुरु का वाम मार्गी साधना और स्त्री-भोग के मार्ग से उद्धार किया था। इस आधार पर नाथपंथ की स्थापना का वास्तविक श्रेय गोरखनाथ को ही प्राप्त होता है। ये अपने युग के प्रमुख धार्मिक नेता थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का अनुमान है कि ये ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। गोरखनाथ ने अपने युग में प्रचलित साधना-पद्धतियों जैसे - सिद्ध-साधना, कापालिक साधना, तांत्रिक-साधना, आदि का परिष्कार करते हुए नाथ संप्रदाय का संगठन किया था। गोरखनाथ का समय 9 से लेकर 13वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। राहुल सांकृत्यायन ने इनका समय 845 ई० तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 9वीं शताब्दी माना है, जबकि आचार्य शुक्ल और रामकुमार वर्मा ने इन्हें 13वीं सदी

सदी का माना है। डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने इन्हें 11वीं शती का माना है।

गोरख गोरखनाथ के समय तक भारतीय धर्म साधनाएँ पतन के कगार पर पहुँच चुकी थी, गोरखनाथ ने उन पतित धर्म-साधनाओं को परिष्कृत कर अपने मार्ग के अनुकूल शैवों, शाक्तों आदि को अपने संप्रदाय में सम्मिलित कर लिया। इस प्रकार वे अपने युग के एक बहुत बड़े समन्वयवादी साधक थे।

गोरखनाथ के लिखे 30 संस्कृत ग्रंथों और 42 हिन्दी ग्रंथों का उल्लेख किया जाता है। संस्कृत ग्रंथों में गोरक्ष शतक, गोरक्ष संहिता, योगमार्तण्ड, विवेक मार्तण्ड, योग बीज आदि का नाम गिनाए जाते हैं। इनके हिन्दी ग्रंथों में अधिकांश की प्रमाणिकता संदिग्ध है। डॉ० पीताम्बर-दत्त बड़थ्वाल, प्रबोध चंद्र बागची, तथा हजारी-प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वानों ने गोरखनाथ की रचनाओं की प्रमाणिकता पर विचार किया है। डॉ० बड़थ्वाल ने गोरखनाथ की 40 कृतियों का एक संग्रह 'गोरखबानी' नाम से प्रकाशित कराया है, किंतु इसमें संकलित कृतियों में से केवल 14 को ही प्रमाणिक माना है। उनकी प्रमाणिकता प्राप्त रचनाओं में 'सबदी', 'पद', 'प्राण संकली', 'नरवैबोध', 'अभैमात्रा', 'योग', 'आत्म-बोध', 'सतवार', 'मछीन्द्र गोरख बोध', 'रोमावली'

'ज्ञान तिलक', 'ज्ञान चौंतिसा', तथा 'पंचमात्रा' प्रमुख है। इसके अतिरिक्त गोरखवाणी में संकलित रचनाओं में 'महादेव गोरख गुष्ट', 'शिष्ट पुराण', 'दयाबोध', 'नवग्रह', 'नवरात्र', 'गोरख गणेश गोष्ठी', 'गोरखदत्त गोष्ठी' प्रमुख हैं किन्तु इन रचनाओं को अप्रमाणिक माना गया है।

गोरखनाथ की रचनाओं में सहज समाधि अथवा शून्य साधना का वर्णन मिलता है, साथ ही उलटी साधना का भी वर्णन मिलता है। गोरखनाथ और उनके गोरखपंथ को सिद्धों और संतों के मध्य की कड़ी के रूप में देखा जाता है। गोरखनाथ के पदों में मद्य, मांस, काम, क्रोध, आसक्ति आदि का परित्याग तथा शीतलता, गुरुमहत्ता, मन संयम, ब्रह्मचर्य, शारीरिक एवं मानसिक पवित्रता इत्यादि के महत्व का वर्णन मिलता है। (क्रमशः)

डॉ० मीनाक्षी कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
ए० बी० एस० एम० कॉलेज, केवटी
ललित नारायण मिथिला विवि,
दरभंगा।